प्रस्थितायां प्रतिष्ठेथाः स्थितायां स्थितिमाचरेः ।

निषण्णायां निषीदास्यां पीताम्भसि पिबेरपः ।।89।।

अन्वय अस्यां प्रस्थितायां (त्वं) प्रतिष्ठेथाः, स्थितायां स्थितिम् आचरेः, निषण्णायां निषीद, पीताम्भसि अपः पिबेः।

अनुवाद जब यह चले तब तुम भी चलना, जब खड़ी हो जाए तो खड़े हो जाना और बैठे तो बैठना। जब यह जल पी चुके तो तब तुम जल पीना। (इस प्रकार छाया के समान इसका अनुसरण कर तुम इसे सेवा से प्रसन्न कर सकते हो।)।

टिप्पणियाँ

प्रस्तुत श्लोक तथा अगले श्लोक में महर्षि वशिष्ठ राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा को शिक्षा देते हैं कि वे कैसे नन्दिनी गौ की सेवा करें जिससे वह उन पर प्रसन्न हो। प्रस्तुत श्लोक के अन्वय पर ध्यान दीजिए:.

अस्यां प्रस्थितायां (सत्यां) त्वं प्रतिष्ठेथाः, अस्यां स्थितायां सत्यां स्थितिं आचरेः, (अस्यां) निषण्णायां (त्वं) निषीद, (अस्यां) पीताम्भसि (त्वं) अपः पिबेः।

प्रस्थितायाम् प्र धातु स्था क्त टाप्, सप्तमी विभक्ति, एकवचन। जब वह चल पड़े उनके चलने के बाद (तुम चलना)।

प्रतिष्ठेथाः प्र धातु स्था (आत्मनेपद) लिङ् मध्यम पुरुष, एकवचन। (तब) तुम चलना। यद्यपि स्था धातु परस्मैपदी होती है परन्तु जब इसके पूर्व 'सम्', 'अव', 'प्र' और 'वि' उपसर्ग आ जाते हैं तब यह 'समवप्रविभ्यः स्थः' इस सूत्र से आत्मनेपदी हो जाती है।

तब 'संतिष्ठते' 'अवतिष्ठते' इत्यादि आत्मनेपदी धातु के समान रूप चलते हैं। 'प्रतिष्ठेथाः' भी लिङ् लकार में आत्मनेपदी रूप है।

निषण्णायाम् नि धातु सद् क्त टाप्, स्त्रीलिंग सप्तमी एकवचन। बैठ जाने पर अर्थात् जब यह गौ बैठ जाए (तब आप बैठना)

निषीद आप बैठना।

पीताम्भसि पीतं अम्भः यथा सा, पीताम्भः (बहुव्रीहि), तस्याम्। जो पानी पी चुकी है, उसके जल पीने पर (आप जल पीना)।